

रविवार 9 फ़रवरी, 2025

विषय— आत्मा

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 6: 63

"आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और जीवन भी हैं।" — मसीह यीशु

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 119: 33-37, 40

- ³³ हे यहोवा, मुझे अपनी विधियों का मार्ग दिखा दे; तब मैं उसे अन्त तक पकड़े रहूंगा।
³⁴ मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े रहूंगा और पूर्ण मन से उस पर चलूंगा।
³⁵ अपनी आज्ञाओं के पथ में मुझ को चला, क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हूं।
³⁶ मेरे मन को लोभ की ओर नहीं, अपनी चित्तौनियों ही की ओर फेर दे।
³⁷ मेरी आंखों को व्यर्थ वस्तुओं की ओर से फेर दे; तू अपने मार्ग में मुझे जिला।
⁴⁰ देख, मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूं; अपने धर्म के कारण मुझ को जिला।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 71: 1 (से:), 3, 6 (मेरी प्रशंसा), 16

- ¹ हेयहोवा मैं तेरा शरणागत हूं!
³ मेरे लिये सनातन काल की चट्टान का धाम बन, जिस में मैं नित्य जा सकूँ; तू ने मेरे उद्धार की आज्ञा तो दी है, क्योंकि तू मेरी चट्टान और मेरा गढ़ ठहरा है॥
⁶ ... मैं नित्य तेरी स्तुति करता रहूंगा॥
¹⁶ मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन करता हुआ आऊंगा, मैं केवल तेरे ही धर्म की चर्चा किया करूंगा॥

2. यशायाह 42: 1-6

- 1 मेरे दास को देखो जिसे मैं संभाले हूँ, मेरे चुने हुए को, जिस से मेरा जी प्रसन्न है; मैं ने उस पर अपना आत्मा रखा है, वह अन्यजातियों के लिये न्याय प्रगट करेगा।
- 2 न वह चिल्लाएगा और न ऊँचे शब्द से बोलेगा, न सड़क में अपनी वाणी सुनायेगा।
- 3 कुचले हुए नरकट को वह न तोड़ेगा और न टिमटिमाती बत्ती को बुझाएगा; वह सच्चाई से न्याय चुकाएगा।
- 4 वह न थकेगा और न हियाव छोड़ेगा जब तक वह न्याय को पृथ्वी पर स्थिर न करे; और द्वीपों के लोग उसकी व्यवस्था की बात जाहेंगे॥
- 5 ईश्वर जो आकाश का सृजने और तानने वाला है, जो उपज सहित पृथ्वी का फैलाने वाला और उस पर के लोगों को सांस और उस पर के चलने वालों को आत्मा देने वाला यहावो है, वह यों कहता है:
- 6 मुझ यहोवा ने तुझ को धर्म से बुला लिया है; मैं तेरा हाथ थाम कर तेरी रक्षा करूंगा; मैं तुझे प्रजा के लिये वाचा और जातियों के लिये प्रकाश ठहराऊंगा; कि तू अन्धों की आंखें खोले।

3. मत्ती 8: 5-10, 13

- 5 और जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस से बिनती की।
- 6 कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है।
- 7 उस ने उस से कहा; मैं आकर उसे चंगा करूंगा।
- 8 सूबेदार ने उत्तर दिया; कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।
- 9 क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूँ, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक से कहता हूँ, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूँ, कि यह कर, तो वह करता है।
- 10 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।
- 13 और यीशु ने सूबेदार से कहा, जा; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया॥

4. यूहन्ना 4: 5 (से 2nd), 6, 7, 9-11, 13-21, 23, 24

- 5 सो वह सूखार नाम सामरिया के एक नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है, जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था।
- 6 और याकूब का कूआं भी वहीं था; सो यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएं पर यों ही बैठ गया, और यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई।
- 7 इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आई: यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी पिला।

- 9 उस सामरी स्त्री ने उस से कहा, तू यहूदी होकर मुझे सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है? (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते)
- 10 यीशु ने उत्तर दिया, यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझे से कहता है; मुझे पानी पिला तो तू उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।
- 11 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कूआं गहिरा है: तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहां से आया?
- 13 यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा।
- 14 परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा: वरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।
- 15 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊं और न जल भरने को इतनी दूर आऊं।
- 16 यीशु ने उस से कहा, जा, अपने पति को यहां बुला ला।
- 17 स्त्री ने उत्तर दिया, कि मैं बिना पति की हूं: यीशु ने उस से कहा, तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति की हूं।
- 18 क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है, और जिस के पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं; यह तू ने सच कहा है।
- 19 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, मुझे ज्ञात होता है कि तू भविष्यद्वक्ता है।
- 20 हमारे बाप दादों ने इसी पहाड़ पर भजन किया: और तुम कहते हो कि वह जगह जहां भजन करना चाहिए यरूशलेम में है।
- 21 यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में।
- 23 परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढता है।
- 24 परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

5. रोमियो 8: 1-6, 9 (से 1st), 10 (वह आत्मा), 11, 14

- 1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।
- 2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
- 3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
- 4 इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।

- 5 क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।
- 6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।
- 9 परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।
- 10 ...आत्मा धर्म के कारण जीवित है।
- 11 लेकिन यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुआओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुआओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।
- 14 इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।

6. 1 थिस्सलुनीकियों 5: 19

- 19 आत्मा को न बुझाओ।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 331: 11 (यह)-16

शास्त्रों का अर्थ है कि ईश्वर सब कुछ है। इससे यह पता चलता है कि ईश्वरीय मन और उनके विचारों के अलावा किसी भी चीज़ में वास्तविकता या अस्तित्व नहीं है। शास्त्र यह भी घोषणा करते हैं कि ईश्वर आत्मा है। इसलिए आत्मा में सब कुछ सामंजस्य है, और कोई मतभेद नहीं हो सकता; सब कुछ जीवन है, और कोई मृत्यु नहीं है।

2. 124: 25-26 (से 1st.)

आत्मा सभी चीज़ों का जीवन, पदार्थ और निरंतरता है।

3. 468: 8-15

सवाल। — होने का वैज्ञानिक कथन क्या है?

उत्तर। —पदार्थ में कोई जीवन, सत्य, बुद्धिमत्ता नहीं है, न ही पदार्थ। सब अनंत मन और उसकी अनंत अभिव्यक्ति है, भगवान के लिए सभी में है। आत्मा अमर सत्य है; मामला नश्वर त्रुटि है। आत्मा ही वास्तविक और शाश्वत है; पदार्थ असत्य और लौकिक है। आत्मा ईश्वर है, और मनुष्य उसकी छवि और समानता है। इसलिए आदमी भौतिक नहीं है; वह आध्यात्मिक है।

4. 138: 14-18

आत्मा की सर्वोच्चता वह नींव थी जिस पर यीशु ने निर्माण किया। उनका उत्कृष्ट सारांश प्रेम के धर्म की ओर संकेत करता है।

यीशु ने ईसाई युग में समस्त ईसाई धर्म, धर्मशास्त्र और उपचार के लिए मिसाल कायम की।

5. 139: 4-9

शुरुआत से लेकर अंत तक, पवित्रशास्त्र आत्मा, मन की बात की विजय से भरपूर है। मूसा ने मन की शक्ति को उसके द्वारा सिद्ध किया, जिसे पुरुषों ने चमत्कार कहा; तब यहोशू, एलिय्याह और एलीशा ने किया। संकेत और चमत्कार के साथ ईसाई युग की शुरुआत हुई।

6. 494: 15 (यीशु)-24

यीशु ने शारीरिक शक्ति के साथ-साथ आत्मा की असीम क्षमता की अक्षमता का प्रदर्शन किया, इस प्रकार मानव भावना को अपने स्वयं के दोषों से भागने में मदद करने और दिव्य विज्ञान में सुरक्षा की तलाश करने के लिए। कारण, सही ढंग से निर्देशित, कॉर्पोरल सेंस की त्रुटियों को ठीक करने का कार्य करता है; लेकिन पाप, बीमारी और मृत्यु वास्तविक प्रतीत होगी (भले ही सोते हुए सपने के अनुभव वास्तविक लगते हैं) जब तक कि मनुष्य के शाश्वत सद्भाव का विज्ञान वैज्ञानिक की अखंड वास्तविकता के साथ उनके भ्रम को नहीं तोड़ता।

7. 428: 22-29

महान आध्यात्मिक तथ्य को सामने लाना चाहिए कि मनुष्य है, पूर्ण और अमर नहीं। हमें हमेशा अस्तित्व की चेतना को धारण करना चाहिए, और जल्द ही या बाद में, मसीह और ईसाई विज्ञान के माध्यम से, हमें पाप और मृत्यु पर नियंत्रण रखना चाहिए। मनुष्य की अमरता के प्रमाण अधिक स्पष्ट हो जाएंगे, क्योंकि भौतिक विश्वासों को छोड़ दिया जाता है और होने के अमर तथ्यों को स्वीकार किया जाता है।

8. 425: 23-28

चेतना एक बेहतर शरीर का निर्माण करती है जब सामग्री में विश्वास की जीत हुई है। आध्यात्मिक समझ से भौतिक विश्वास को ठीक करें, और आत्मा आपको नए सिरे से बनाएगी। आप फिर से ईश्वर को नाराज करने के अलावा कभी नहीं डरेंगे, और आप कभी भी यह विश्वास नहीं करेंगे कि हृदय या शरीर का कोई भी हिस्सा आपको नष्ट कर सकता है।

9. 170: 14-17, 22-30 अगला पृष्ठ

सत्य की मांगें आध्यात्मिक हैं, और मन के माध्यम से शरीर तक पहुंचती हैं। मनुष्य की आवश्यकताओं के सर्वोत्तम व्याख्याकार ने कहा: "कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे, और क्या पीएंगे।"

आध्यात्मिक कार्य एक ऐसा प्रश्न है जिस पर विचार किया जाना है, अन्य सभी से अधिक आध्यात्मिक कारण मानव प्रगति से संबंधित है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह युग इस विषय पर विचार करने, आत्मा की सर्वोच्चता पर कुछ विचार करने तथा कम से कम सत्य के वस्त्र के छोर को छूने के लिए तैयार है।

मनुष्य का वर्णन विशुद्ध रूप से भौतिक या भौतिक और आध्यात्मिक दोनों के रूप में - लेकिन किसी भी मामले में उसके शारीरिक संगठन के आधार पर, - एक पेंडोरा बॉक्स है, जिसमें से सभी बीमारियां निकल गई हैं, विशेष रूप से निराशा। सामग्री, जो दैवीय शक्ति को अपने हाथों में लेती है और एक निर्माता होने का दावा करती है, एक कल्पना है, जिसमें बुतपरस्ती और वासना समाज द्वारा इतनी स्वीकृत हैं कि मानव जाति ने अपने नैतिक छूत को पकड़ लिया है।

भौतिकता के आध्यात्मिक विपरीत के विवेक के माध्यम से, यहां तक कि मसीह, सत्य के माध्यम से, मनुष्य दिव्य विज्ञान की कुंजी के साथ स्वर्ग के द्वार को फिर से खोल देगा जो मानव मान्यताओं ने बंद कर दिया है, और खुद को निष्कलंक, ईमानदार, शुद्ध और स्वतंत्र पाएगा, नहीं उसे अपने जीवन या मौसम की संभावनाओं के लिए पंचांगों से परामर्श लेने की आवश्यकता है, यह जानने के लिए कि वह कितना आदमी है, मस्तिष्क विज्ञान का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं है।

मनुष्य सहित ब्रह्मांड पर मन का नियंत्रण अब एक खुला प्रश्न नहीं है, बल्कि विज्ञान है। यीशु ने बीमारी और पाप को ठीक करने और मृत्यु की नींव को नष्ट करके दिव्य सिद्धांत और अमर मन की शक्ति का वर्णन किया।

अपनी उत्पत्ति और प्रकृति को भूलकर, मनुष्य स्वयं को पदार्थ और आत्मा का संयुक्त रूप मानता है। उनका मानना है कि आत्मा को पदार्थ के माध्यम से छान लिया जाता है, तंत्रिका पर ले जाया जाता है, पदार्थ के संचालन द्वारा निष्कासन के लिए उजागर किया जाता है। बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक, - हाँ, अनंत मन की छवि, - गैर-बुद्धि के अधीन!

शरीर और आत्मा के बीच कोई सहानुभूति नहीं है, जितनी कि बेलियाल और मसीह के बीच है।

पदार्थ के तथाकथित नियम कुछ और नहीं बल्कि झूठी मान्यताएं हैं कि बुद्धि और जीवन वहां मौजूद हैं जहां मन नहीं है। ये झूठे विश्वास सभी पापों और बीमारियों का कारण हैं। विपरीत सत्य, कि बुद्धि और जीवन आध्यात्मिक हैं, कभी भौतिक नहीं, पाप, बीमारी और मृत्यु को नष्ट करते हैं।

10. 491: 9-16

मटेरियल मैन अनैच्छिक और स्वैच्छिक त्रुटि से बना है, एक नकारात्मक अधिकार का और एक सकारात्मक गलत का, बाद वाला खुद को सही कहता है। मनुष्य का आध्यात्मिक व्यक्तित्व कभी गलत नहीं होता। यह मनुष्य के निर्माता की समानता है। पदार्थ नश्वर को वास्तविक उत्पत्ति और होने के तथ्यों से नहीं जोड़ सकता, जिसमें सभी को समाप्त होना चाहिए। यह आत्मा के वर्चस्व को स्वीकार करने से ही है, जो पदार्थ के दावों को खारिज करता है, कि नश्वरता मृत्यु दर को दूर कर सकती है और उस अदम्य आध्यात्मिक लिंक को खोज सकती है जो मनुष्य को दैवीय समानता में स्थापित करता है, जो अपने निर्माता से अविभाज्य है।

11. 167: 17-19, 22-31

एक ईश्वर के पास और आत्मा की शक्ति का लाभ उठाने के लिए, आपको ईश्वर से प्रेम करना चाहिए।

"क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में।" मांस और आत्मा कार्रवाई में अधिक एकजुट नहीं हो सकते हैं, अच्छाई बुराई से मेल खा सकती है। अड़ियल और आधे-अधूरे पद पर बैठना या आत्मा और भौतिक, सत्य और त्रुटि के साथ समान रूप से काम करने की अपेक्षा करना बुद्धिमानी नहीं है। एक तरीका है - ईश्वर और उसका विचार - जो आध्यात्मिक होने की ओर ले जाता है। शरीर की वैज्ञानिक सरकार को दिव्य मन के माध्यम से प्राप्त किया जाना चाहिए। शरीर पर किसी अन्य तरीके से नियंत्रण हासिल करना असंभव है। इस बुनियादी बिंदु पर, डरपोक रूढ़िवाद बिल्कुल बेवजह है। केवल सत्य पर कट्टरपंथी निर्भरता के माध्यम से वैज्ञानिक उपचार शक्ति का एहसास किया जा सकता है।

12. 393: 8-15

मन शारीरिक इंद्रियों का स्वामी है, और बीमारी, पाप और मृत्यु को जीत सकता है। इस ईश्वर प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करें। अपने शरीर पर अधिकार कर लो, और उसकी भावना और कार्य को नियंत्रित करो। आत्मा के सामर्थ्य में वृद्धि का विरोध करना अच्छा है। ईश्वर ने मनुष्य को इसके लिए सक्षम बनाया है, और कुछ भी मनुष्य में दिव्य रूप से दी गई क्षमता और शक्ति को नष्ट नहीं कर सकता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वेषी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6